जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

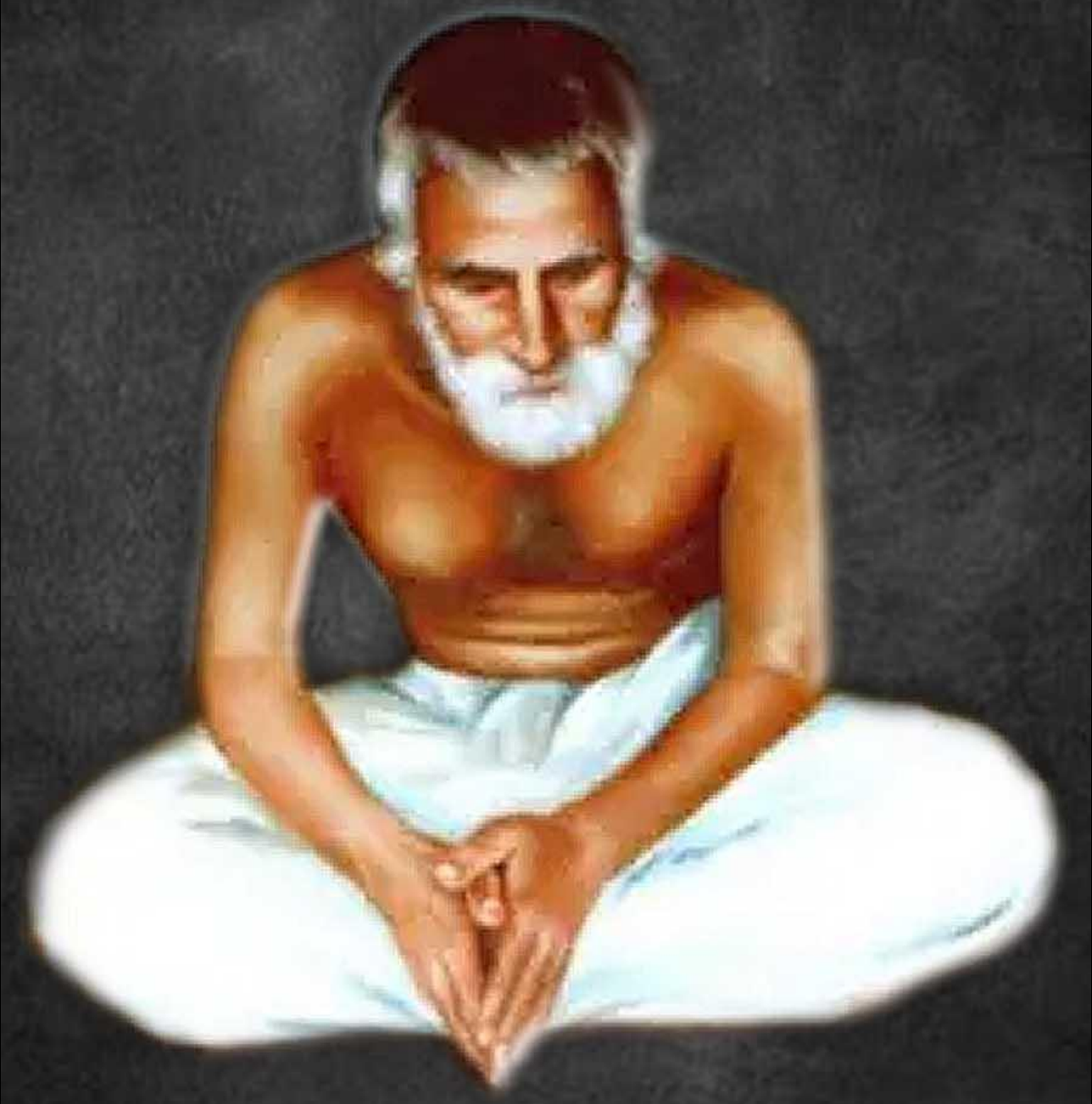

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

महाभागवतों की आसक्ति

श्रीलगुरुदेव

एक बार श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज को एक गृहस्थ वैष्णव एक कीमती शाल उपहार देने के लिए आया। श्रील बाबाजी महाराज ने इस शाल को ग्रहण करके उसको आदर सहित रख लिया एवं इस शाल देने वाले की खूब प्रशंसा की। और एक बार एक गृहस्थ वैष्णव श्रील बाबाजी महाराज को कुछ रुपये देने के लिए आया। श्रील

बाबाजी महाराज ने आदरपूर्वक हाथ बढ़ाकर रुपये ग्रहण कर लिए एवं अपने बहिर्वास (संन्यासी का वस्त्र) के आंचल में 4 - 5 गांठ लगाकर प्यार से रख लिए। रुपये आंचल में सुरक्षित हैं कि नहीं, हाथ लगाकर बार- बार देखने लगे। कोलकाता के किसी एक अत्यन्त विषयी धनी व्यक्ति ने यह लीला देखी। इसे देखकर श्रील बाबाजी महाराज के प्रति उस व्यक्ति की इससे पहले जो थोड़ी कुछ बहुत श्रद्धा थी, वह समाप्त हो गई। श्रील बाबाजी महाराज ने दिनों बाद इस शाल और

रुपयों को दूसरे वैष्णवों को अपनी इच्छा से दे दिया। जब ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद से कोलकाता में यह विषयी व्यक्ति मिला, तब वह कहने लगा, — “मैं श्रील बाबाजी महाराज से मिलने गया था, लेकिन देखा, वे कितने यत्न के साथ शाल और रुपयों को ग्रहण कर रहे थे एवं देने वाले का खूब खुशामद कर रहे थे। ये कैसे साधु हैं, समझा नहीं। विषयी धनी व्यक्ति के मुख से यह बात सुनकर श्रील प्रभुपाद जी कहने लगे, – 'आप उनके प्रथम लीला -

अभिनय मात्र को देखकर वंचित हो गये हैं। वस्तुतः कृष्ण विषय में और कृष्ण सेवा में ही - में उन्होंने आसक्ति दिखाई है। और हम अपने भोग्य विषयों की सेवा में कितनी आसक्ति दिखाते हैं ! जो धन से प्यार करने वाला मूढ़ व्यक्ति है वही ऐसा सोचता है कि श्रील बाबाजी महाराज का ध न के प्रति बहुत लोभ है। वे वैष्णव- सेवा के सहयोगी व्यक्ति की प्रशंसा कर रहे थे, और हम अपने भोगों की सामग्री को जुटाने में मदद करने वाले का खुशामद करते हैं। कामुक व्यक्ति जिस प्रकार अपने

कान - भाव से ही सर्वत्र कामिनी देखते हैं, भोगी और त्यागी - अभक्त भी उसी प्रकार महाभागवतों के कृष्ण सम्बन्धी विषयानुराग को अर्थात् कृष्ण का सुख विधान की चेष्टा को जड़ विषयों में आसक्ति समझते हैं।"

श्रीलगुरुदेव